Shiv Chalisa (शिव चालीसा)

Shiv Chalisa (शिव चालीसा)

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवनरिजा सुवन,
मंगल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तुम,
देहु अभय वरदान ॥दान ॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला ।
दीन दयाला ।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥

पाला ॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके।
कानन कुण्डल नागफनी के॥

अंग गौर शिर गंग बहाये ।
गंग बहाये ।
मुण्डमाल तन क्षार लगाए ॥ लगाए ॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे ।
छवि को देखि नाग मन मोहे ॥

नाग मन मोहे ॥ 4
मैना मातु की हवे दुलारी ।ी ।
बाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥

ी ॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।
भारी ।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥रुन क्षयकारी ॥

नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे ।
गणेश सोहै तहँ कैसे ।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥ मध्य कमल हैं जैसे ॥

कार्तिक श्याम और गणराऊ ।
या छवि को कहि जात न काऊ ।।

जात न काऊ ।। 8

देवन जबहीं जाय पुकारा ।ा ।
तब ही दुख प्रभु आप निवारा ।।

ा ।।

किया उपद्रव तारक भारी ।रव तारक भारी ।
देवन सब मिलि तुमहिंजुहारी ।।

हिंजुहारी ।।

तुरत षडानन आप पठायउ ।त षडानन आप पठायउ ।
लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ।।

ायउ ।।

आप जलंधर असुर संहारा ।ं
हारा ।
सुयश तुम्हार विदित संसारा ।।ं
सारा ।। 12
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।
सन युद्ध मचाई ।
सबहिंकृपा कर लीन बचाई ।।

लीन बचाई ।।

किया तपहिंभागीरथ भारी ।
हिंभागीरथ भारी ।
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ।।

ज्ञा तासु पुरारी ।।

दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं ।
न महँ तुम सम कोउ नाहीं ।
सेवक स्तुति करत सदाहीं ।।

त सदाहीं ।।

वेद नाम महिमा तव गाई।मा तव गाई।
अकथ अनादि भेद नहिंपाई ॥

हिंपाई ॥ 16
प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला ।
मंथन में ज्वाला ।
जरत सुरासुर भए विहाला ॥हाला ॥

कीन्ही दया तहं करी सहाई ।ं
करी सहाई ।
नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।्
र जब कीन्हा ।
जीत केलंक विभीषण दीन्हा ॥भीषण दीन्हा ॥

सहस कमल में हो रहे धारी ।
कीन्ह परीक्षा तबहिंपुरारी ॥

हिंपुरारी ॥ 20
एक कमल प्रभु राखेउ जोई ।ाखेउ जोई ।
कमल नयन पूजन चहं सोई ॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।ंकर ।
भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥

त वर ॥

जय जय जय अनन्त अविनाशी ।नाशी ।
करत कृपा सब केघटवासी ॥त कृपा सब केघटवासी ॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ।
सतावै ।
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ॥ चैन न आवै ॥ 24
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ।ो ।
येहि अवसर मोहि आन उबारो ॥

ो ॥

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।
रुन को मारो ।

सकट से मोंहं आन उबारो ॥

आन उबारो ॥

मात-पिता भ्राता सब होई ।ता भ्राता सब होई ।
संकट में पूछत नहिंकोई ॥ंकोई ॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी ।वामी एक है आस तुम्हारी ।
आय हरहु मम संकट भारी ॥ंकट भारी ॥ 28
धन निर्धन को देत सदा हीं ।
धन को देत सदा हीं ।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं ॥

अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी ।
करैं तुम्हारी ।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥

शंकर हो संकट केनाशन । हो संकट केनाशन ।
मंगल कारण विघ्न विनाशन ॥

नाशन ॥

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं ।
ध्यान लगावैं ।
शारद नारद शीश नवावैं ॥ नवावैं ॥ 32
नमो नमो जय नमः शिवाय ।वाय ।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥ न पाय ॥

जो यह पाठ करे मन लाई ।
ता पर होत है शम्भु सहाई ॥म्भु सहाई ॥

ऋनियां जो कोई हो अधिकारी ।ी ।
पाठ करे सो पावन हारी ॥

ी ॥

पुत्र हीन कर इच्छा जोई ।छा जोई ।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥ होई ॥ 36
पण्डित त्रयोदशी को लावे ।योदशी को लावे ।
ध्यान पूर्वक होम करावे ॥

ावे ॥

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा ।ा ।
ताकेतन नहीं रहै कलेशा ॥

ा ॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ।ावे ।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ॥ सम्मुख पाठ सुनावे ॥

जन्म जन्म केपाप नसावे ।्
म केपाप नसावे ।
अन्त धाम शिवपुर में पावे ॥त धाम शिवपुर में पावे ॥ 40
कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी ।ी ।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी ॥ी ॥

॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही प्रातः ही,
पाठ करौं चालीसा ।ौंचालीसा ।
तुम मेरी मनोकामनाी मनोकामना,
पूर्ण करो जगदीश ॥ो जगदीश ॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु
हेमन्त ऋतु,
संवत चौसठ जान ।
अस्तुति चालीसा शिवहि
,
पूर्ण कीन कल्याण ॥ कीन कल्याण ॥

AartiPooja.com